

मई
May
2026

खंड/Vol. : 51

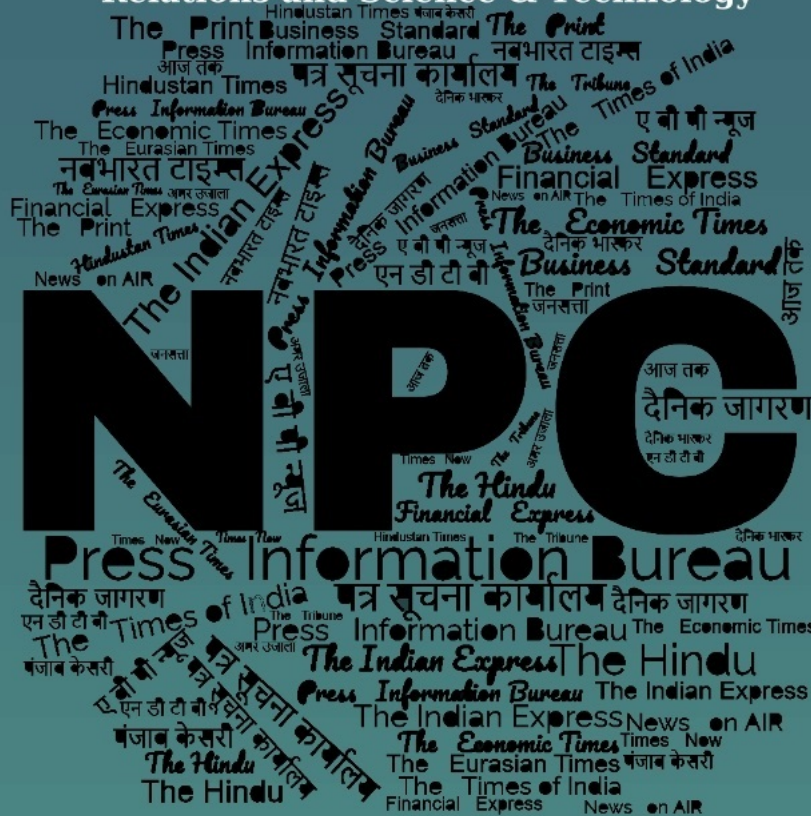
अंक/Issue : 087

12/05/2026

समाचार पत्रों से चयनित अंश Newspapers Clippings

डीआरडीओ समुदाय को डीआरडीओ प्रौद्योगिकियों, रक्षा प्रौद्योगिकियों, रक्षा नीतियों, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की नूतन जानकारी से अवगत कराने हेतु दैनिक सेवा

A Daily service to keep DRDO Fraternity abreast with DRDO Technologies, Defence Technologies, Defence Policies, International Relations and Science & Technology



रक्षा विज्ञान पुस्तकालय

Defence Science Library

रक्षा वैज्ञानिक सूचना एवं प्रलेखन केंद्र

Defence Scientific Information & Documentation Centre

मेटकॉफ हाउस, दिल्ली - 110 054

Metcalf House, Delhi - 110 054

CONTENTS

S. No.	Title	Source	Page No.
DRDO News			1-2
1	अब स्वदेशी कामीकाजी ड्रोन और स्मार्ट हथियार दुश्मन पर बरपाएंगे कहर	<i>Dainik Jagran</i>	1
Defence News			2-6
2	India eyes wartime edge with new joint doctrines	<i>Hindustan Times</i>	2
3	नई रक्षा तकनीक अपनाए भारत	<i>Dainik Jagran</i>	3
4	Indian Coast Guard Conducts Girder Laying Ceremony for Indigenous Air Cushion Vehicles in Goa	<i>Press Information Bureau</i>	5
Science & Technology News			6-7
5	Independent India's Major Share of Technological Transformation Happened in the Last One Decade, says Dr. Jitendra Singh while addressing the 'National Technology Day' programme	<i>Press Information Bureau</i>	6

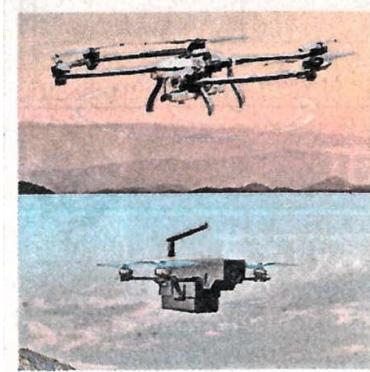
DRDO News

अब स्वदेशी कामीकाजी ड्रोन और स्मार्ट हथियार दुश्मन पर बरपाएंगे कहर

Source: Dainik Jagran, Dt. 12 May 2026

भारतीय सेना की मारक क्षमता को और मजबूत बनाने के लिए द्रो नए स्वदेशी अत्याधुनिक घातक हथियारों से लैस किया गया है। इनमें पहला, ड्रोन (यूएबी) से लांच किया जाने वाली गाइडेड लोइटरिंग म्यूनिशन - यूएलपीजीएम (यूएवी लांच्ड प्रिसिनन गाइडेड म्यूनिशन) और दूसरा, हवा में सीधी उड़ान भरने की क्षमतावाला कामीकाजी ड्रोन 'अग्निका वीटीओएल-एफपीबी' शामिल हैं। इन्हें सेना की आपातकालीन खरीद (ईपी-6) के तहत उपलब्ध कराया गया है। इन प्रणालियों के सेना में शामिल होने से दुश्मन के ठिकानों पर सटीक, तेज व सुरक्षित तरीके से हमला करना संभव होगा। यह सिस्टम कठिन युद्ध परिस्थितियों, ऊंचाई वाले इलाकों और इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर जैसे माहौल में भी प्रभावी ढंग से काम कर सकते हैं। इससे सेना को आतंकवाद विरोधी अभियानों, घुसपैठ रोकने, पहाड़ी युद्धक्षेत्रों और शहरी संघर्षों में रणनीतिक बढ़त मिल सकेगी।

क्षा सूत्रों के अनुसार, हैदराबाद में पश्चिमी कमान के अधिकारियों की मौजूदगी में इन प्रणालियों को सेना को सौंपा गया। इससे पहले इनके ट्रायल सफल रहे।



यूएवी लांच्ड प्रिसिनन गाइडेड म्यूनिशन (ऊपर) और कामीकाजी ड्रोन 'अग्निका वीटीओएल-1 एफपीबी' (नीचे) ●

- सेना को सौंपे गए ड्रोन व यूएवी से संचालित होने वाले लोइटरिंग गाइडेड म्यूनिशन, जीपीएस जाम होने पर भी नहीं चूकेगा निशाना

यूएलपीजीएम

- ड्रोन से लांच होने वाला देश का पहला स्वदेशी लोइटरिंग म्यूनिशन
- स्थिर और चलायमान दोनों तरह के लक्ष्य भेदने में सक्षम
- जीपीएस और कम्युनिकेशन जाम होने पर भी प्रभावी
- एंटी-जैमिंग और एंटी-स्पूफिंग तकनीक से लैस सिस्टम
- यूएलपीजीएम 20 किलोमीटर दूर तक लक्ष्य भेदने में सक्षम
- दो किलो वारहेड के साथ लक्ष्य के एक मीटर दायरे तक हमले की क्षमता

अग्निका कामीकाजी ड्रोन

- अग्निका वीटीओएल-1 देश का पहला स्वदेशी एफपीबी कामीकाजी ड्रोन
- रनवे के बिना सीधे उड़ान भरने और उतरने में सक्षम
- शहरी युद्ध, पहाड़ी क्षेत्रों और सीमित जगहों में संचालन के लिए डिजाइन
- पांच किलोमीटर रेंज और 30 मिनट तक उड़ान क्षमता
- अधिकतम 60 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार
- इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर माहौल और जीपीएस बाधित क्षेत्रों में भी प्रभावी

Fig: यूएवी लांच्ड प्रिसिनन गाइडेड म्यूनिशन और कामीकाजी ड्रोन अग्निका वीटीओएल-1 एफपीबी

यूएलपीजीएम पहला स्वदेशी लोइटरिंग म्यूनिशन: यूएलपीजीएम को डीआरडीओ और अडानी डिफेंस एंड एयरोस्पेस ने संयुक्त रूप से विकसित किया है। यह अपनी श्रेणी का देश का पहला स्वदेशी हवा से सतह पर मार करनेवाला लोइटरिंग म्यूनिशन यानी गाइडेड राकेट है, जिसे ड्रोन (यूएवी) से दागा जा सकता है। यह

स्थिर और चलायमान दोनों प्रकार के लक्ष्यों को बेहद सटीकता से नष्ट कर सकता है। इसमें इमेजिंग इंफ्रारेड सीकर लगा है, जिससे दिन-रात और हर मौसम में इसकी मारक क्षमता बनी रहती है। लोडिंग म्यूनिशन अपने लक्ष्य की तलाश में हवा में घूमता रहता है और टारगेट के रेंज में आते ही उस पर हमला कर देता है।

यह प्रणाली उन हालात में भी कारगर साबित होगी, जहां दुश्मन जीपीएस या संचार नेटवर्क को जाम करने की कोशिश करे। एंटी-जैमिंग और एंटी-स्पूफिंग तकनीक से लैस यह सिस्टम सीमावर्ती इलाकों, दुर्गम पहाड़ी मोर्चों और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध के बातावरण में सेना को बढ़त देगा। अग्निका ड्रोन को नहीं चाहिए रनवे अग्निका वीटीओएल-१ को देश का पहला: एफपीबी कामीकाजी ड्रोन बताया जा रहा है। इसे उड़ान भरने के लिए रनवे की जरूरत नहीं पड़ती। यह सीधे ऊपर उठकर उड़ान भर सकता है और बेहद सीमित जगहों से भी संचालित किया जा सकता है। यही वजह है कि इसे शहरी युद्ध, संकरी गलियों, सीमा चौकियों और कठिन पर्वतीय क्षेत्रों में इस्तेमाल के लिए बेहद उपयोगी माना जा रहा है। यह ड्रोन ऐसे हालात में भी दुश्मन पर हमला कर सकता है, जहां जीपीएस काम न कर रहा हो या इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर चल रहा हो। इससे दुश्मन के सैनिकों व हल्के सैन्य वाहनों को प्रभावी क्षति पहुंचाई जा सकती है

*

Defence News

India eyes wartime edge with new joint doctrines

Source: Hindustan Times, Dt. 12 May 2026

India is set to unveil two warfighting doctrines aimed at integrating military capabilities in the critical fields of intelligence, surveillance, and reconnaissance (ISR), and targeting for faster decision-making during war and hitting the adversary harder, as the armed forces advance their roadmap for theaterisation to achieve battlefield dominance, top officials aware of the matter said on Monday.

The joint doctrines for ISR and targeting, prepared by Headquarters Integrated Defence Staff (IDS), are expected to be issued within two months, the officials said, asking not to be named. This is the latest in a series of steps towards theatre commands—a long-awaited military reform to integrate the armed forces' resources for future conflicts.

These will likely be the first manuals—aimed at bolstering jointness in the armed forces—to be released under the leadership of India's next Chief of Defence Staff, Lieutenant General NS Raja Subramani, who takes charge on May 30. Jointness is an essential prerequisite for creating theatre commands.

“From satellites, drones, signal intelligence to radars, joint ISR for enhanced situational awareness will involve sensor fusion across land, sea, air, space, and cyber domains. The doctrine will serve as the foundational framework for fusing data from diverse sources into actionable intelligence that will enable commanders to identify threats and make timely decisions,” said one of the officials cited above.

The doctrine will also provide the framework for leveraging artificial intelligence to enhance joint ISR for planning and conducting operations.

The joint doctrine for targeting will form the basis for applying force against targets selected and prioritised by the commanders, said another official. "It will enable commanders to assign targeting tasks to any service best suited to respond in the situation. It could also be a combination of two services, depending on the mission. We are looking at integrating procedures for joint effects to achieve specific results. The doctrine will do away with duplication and enhance effectiveness," the official added.

Subramani is expected to fast-track the establishment of joint services commands, a key objective of the theaterisation drive. These commands will integrate military elements, assets, and personnel from the three services under a single commander-in-chief. The outgoing CDS, General Anil Chauhan, recently submitted a detailed proposal to advance theaterisation to the defence minister. The model involves raising a China-centric northern theatre command in Lucknow, a Pakistan-centric western theatre command in Jaipur, and a maritime theatre command in Thiruvananthapuram.

The government identified the establishment of theatre commands for the integrated application of force, operational efficiency, and optimal resource utilisation as a key area for focused intervention in 2025.

India has already released joint doctrines for integrated communication architecture, Special Forces (SF) operations, airborne and heliborne operations, and multi-domain operations. The doctrine for SF operations covers a range of subjects including joint training, future weapon profile, operational imperatives, and issues related to command, control and planning. The manual on airborne and heliborne operations states that their success will hinge on the integration of advanced technologies, joint services cooperation and comprehensive training to facilitate technological absorption and synergy of tactics, techniques and procedures.

The joint doctrine for multi-domain operations charts the way forward for integrated and synergised employment of the armed forces across land, sea, air, space and cyber domains to create a resilient, responsive and agile force structure. Last year, India notified new rules under an overarching law to boost jointness, command efficiency and operational synergy in the armed forces, weeks after the May 7-10 clash with Pakistan under Operation Sindoor, which saw the three services work jointly.

<https://www.hindustantimes.com/india-news/india-eyes-wartime-edge-with-new-joint-doctrines-101778527156459.html>

*

नई रक्षा तकनीक अपनाए भारत

- शिवकांत शर्मा

Source: Dainik Jagran, Dt. 12 May 2026

रूस यूक्रेन से दस गुना शक्तिशाली परमाणु महाशक्ति, लेकिन चार साल लंबी लड़ाई के बावजूद यूक्रेन को नहीं झुका पाया है। अमेरिका ईरान से सौ गुना शक्तिशाली परमाणु महाशक्ति है, मगर दो महीनों के विनाशकारी हमलों के बावजूद ईरान को नहीं झुका पाया है। कारण शायद यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेन्स्की के गत

माह के उस दावे में छिपा है कि उनकी सेना के स्वायत्त रूप से काम करने वाले रोबोट वाहनों और ड्रोन प्रणाली ने एक रूसी मोर्चे पर कब्जा कर लिया और तीन रूसी सैनिकों को बंदी बना लिया। लगता है दुनिया फिर उस युग में प्रवेश कर रही, जहां सेनाओं की जगह उनके शस्त्रास्त्रों का आपस में संग्राम हुआ करेगा। यूक्रेन इस समय रूसी सैनिकों, वाहनों और ठिकानों को नष्ट करने, युद्ध में फंसे सैनिकों को रसद पहुंचाने और घायल सैनिकों को निकालने के लिए स्वायत्त रूप से काम करने वाली रोबोट प्रणाली का प्रयोग कर रहा है। चार साल से चल रही लड़ाई में यूक्रेन के लगभग डेढ़ लाख सैनिक मारे जा चुके हैं, इसलिए वह रूस की सीमा पर 30 से 40 किमी चौड़ी पट्टी को ऐसे क्षेत्र में बदलना चाहता है, जहां स्वायत्त रोबोट और ड्रोन दुश्मन को देखते ही मार दें। पिछले साल जून में उसने सौ से अधिक ड्रोन के जरिये रूस में चार हजार किमी भीतर तक हवाई ठिकानों के एक तिहाई विमानों को नष्ट कर दिया था। ऐसे शस्त्रास्त्रों के विकास में रूस भी पीछे नहीं है।

यूक्रेन ने पिछले साल रूस का एक ऐसा ड्रोन पकड़ा था जो एआइ से चलने के कारण दुश्मन के ठिकानों की खुद टोह लगाकर नष्ट करने की क्षमता रखता था। इसे सामान्य ड्रोन की तरह संकेत लेने और भेजने की जरूरत नहीं थी, इसलिए उसे जाम भी नहीं किया जा सकता था। रूस के रक्षा उद्योग के बारे में यह धारणा रही है कि वह केंद्रीय नियंत्रण और सेना की संस्थागत परंपराओं की जकड़न में बंधा है, जहां कोई व्यापक परिवर्तन बड़ी मुश्किल से होता है। हालांकि यूक्रेन युद्ध की चोट ने उसके पारंपरिक सोच को बदल दिया है। इस क्रम में रूस ने शुरुआत ईरान के शाहीन ड्रोन से की थी, जिनमें परिष्कार करते हुए वह स्वायत्त रूप से काम कर सकने वाले ड्रोनों तक पहुंचा है। उसने एआइ और स्वायत्त शस्त्रास्त्रों के विकास के लिए अपने रक्षा अनुसंधान क्षेत्र को पूरी तरह खोल दिया है। निजी क्षेत्र के स्टार्टअप, प्रयोगशालाएं और यहां तक कि कुछ स्कूल भी ड्रोन और रक्षा उपकरणों में एआइसे स्वायत्त क्षमता के विकास में लगे हैं।

युद्ध के मैदान से हर रोज हजारों वीडियो आते हैं, जिनका आकलन कर जज उनकी जानकारी को ड्रोन और स्वायत्त वाहनों में भरा जाता है। स्वायत्त ड्रोनों और रोबोट वाहनों को मानवाधिकार कार्यकर्ता 27वीं सदी का परमाणु बम बताते हैं। इन स्वायत्त प्रणालियों के प्रयोग से जहां सैनिकों की जान का जोखिम कम होगा, वहीं आम नागरिकों की जान का जोखिम बढ़ सकता है, क्योंकि एआइ से काम कर रहा ड्रोन सैनिक और नागरिक में कैसे भेद कर पाएगा? लड़ रहे सैनिक और समर्पण कर रहे सैनिक में कैसे भेद कर पाएगा? रूस तो यह सब चार साल से चले रही लड़ाई 'जीतने के लिए बना रहा है, क्योंकि उसे यूक्रेन के नागरिकों को होने वाले नुकसान की परवाह नहीं है, लेकिन यूरोप, अमेरिका और भारत जैसे 'देशों को स्वायत्त प्रणालियों के जोखिम पर भी विचार करना होगा। इसके बावजूद अमेरिका पूरे जोश के साथ स्वायत्त रक्षा प्रणालियों के विकास में जुटा है। चूंकि उसने ईरान के साथ हुए युद्ध में ड्रोन की मारक क्षमता देख ली है, इसीलिए युद्ध मंत्री पीटर हेगसेथ का कहना है कि अमेरिका को एआइ की सबसे बड़ी सामरिक शक्ति बनना है। इसे ही ध्यान में रखते हुए पेंटागन ने एआइ विकास में अग्रणी गूगल, ओपनएआइ, एमेजान, माइक्रोसाफ्ट, स्पेसएक्स, ओरेकल और एनवीडिया जैसी कंपनियों के साथ कदमताल शुरू की है। ड्रोन विकास के लिए संभवतः उसे यूक्रेन से हीमदद लेनी होगी, जो इस समय ड्रोन विकासके मोर्चे 'पर बहुत ऊंचे पायदान पर है। हाल में उसने

मार्शियन नाम के स्वायत्त ड्रोन का परीक्षण शुरू किया है, जो 300 किमी प्रति घंटे की गति से उड़ता है और ड्रोन टोही रडारों की पकड़ में भी नहीं आता।

भारत का रक्षा तंत्र भी शस्त्रास्त्र खरीद या विकास की संस्थागत परंपराओं से बंधा है। नए शस्त्रास्त्रों का परीक्षण कर सेना के सभी अंगों से सामंजस्य बिठाने में समय लगता है, जबकि स्वायत्त रोबोट और ड्रोन प्रणालियों का विकास इतनी तेजी से हो रहा है कि कुछ महीनों के भीतर ही उनकी काट तैयार हो जाती है और उनके नए परिष्कृत रूपों का विकास करना पड़ता है। इसलिए इस होड़ में आगे बने रहने के लिए रक्षा कंपनियों के साथ-साथ निजी क्षेत्र और स्टार्टअप की प्रतिभाओं का सहयोग लेना भी जरूरी है। उत्कं सहयोग से ही चीन रोबोट मानवों के विकास में दुनिया में सबसे आगे निकल गया है। पिछले महीने बीजिंग में हुई मानव और रोबोट धावकों की 2 किमी लंबी मैराथन दौड़ में चीनी मोबाइल कंपनी के रोबोट मानव लाइटनिंग ने विश्व रिकार्ड सात मिनट से तोड़ दिया।

भारत के लिए स्वायत्त रोबोट और ड्रोन तकनीक में बढ़त पड़ोसी देशों में आतंकवाद के अड्डों से निपटने में भी मददगार बनेगी। जरूरत पड़ने पर स्वायत्त रोबोट और ड्रोन प्रणाली की मदद से करोड़ों डालर के लड़ाकू विमानों और प्रशिक्षित पायलटों को जोखिम में डाले बिना आपरेशन सिंदूर जैसी कार्वाई की जा सकती है। हालांकि रक्षा विशेषज्ञ यह चेतावनी भी देते हैं कि यदि इस तरह के स्वायत्त ड्रोन और रोबोट आतंकी संगठनों के हाथ पड़ जाएं तो ये गंभीर समस्या भी बन सकते हैं। इसलिए इनसे बचाव के लिए तैयार हो रहे अस्त्रों के विकास पर भी उतना ही ध्यान देने की जरूरत है। इजरायल, ब्रिटेन और अमेरिका ने ऐसी लेजर गन का विकास किया है जे/एक किमी की दूरी से ही ड्रोन को मार गिरा सकती हैं और वे पेट्रियट और एस-400 जैसी मिसाइल रक्षा प्रणालियों की तुलना में बेहद सस्ती हैं, लेकिन इसका दूसरा पक्ष भी है कि एक तो ये कोहरे और बरसात में उतनी कारगर नहीं रहतीं, दूसरे निशाना चूकने या छिटकने पर विमानों और उपग्रहों को नुकसान पहुंचा सकती हैं। इसलिए ड्रोन रक्षा पर अभी और बहुत काम होना बाकी है।

*

Indian Coast Guard Conducts Girder Laying Ceremony for Indigenous Air Cushion Vehicles in Goa

Source: Press Information Bureau, Dt. 11 May 2026

The Girder Laying Ceremony of the 4th, 5th and 6th Air Cushion Vehicles (ACVs) for the Indian Coast Guard (ICG) was held at Rassaim Yard of Chowgule Shipyard, Goa, on May 11, 2026. Under the 'Aatmanirbhar Bharat' initiative, these ACVs are being manufactured with 50% indigenous material in India, marking a significant leap in the collective pursuit of self-reliance and technological advancement.

The contract for six indigenously fabricated and constructed ACVs for ICG was signed with Chowgule & Company Private Limited, Goa on October 24, 2024. These modern air cushion vehicles will be used for multipurpose maritime roles, including high-speed coastal patrolling and reconnaissance in shallow waters, marshy areas and deep sea and interception/interdiction in

areas of operation by both day- night and search and rescue operations, rendering assistance to ships and boats in distress. The ACVs will be deployed to safeguard India's vast and dynamic coastal zone, adding significant strategic mobility and operational flexibility to the ICG.

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2259968®=3&lang=1>

*

Science & Technology News

Independent India's Major Share of Technological Transformation Happened in the Last One Decade, says Dr. Jitendra Singh while addressing the 'National Technology Day' programme

Source: Press Information Bureau, Dt. 11 May 2026

Union Minister of State (Independent Charge) for Science & Technology, Earth Sciences, PMO, Personnel, Public Grievances, Pensions, Atomic Energy and Space, Dr. Jitendra Singh today said that independent India's major share of technological transformation has happened in the last one decade due to decisive policy reforms, strong political support for science and technology, enhanced research freedom and increased participation of the private sector.

Addressing the inaugural session of "Vigyan TECH 2026" organised on the occasion of National Technology Day at BRIC-NII, Dr Jitendra Singh said, India always possessed scientific talent and capable human resources, but after 2014 science and innovation received unprecedented national priority, resulting in rapid technological advancement across sectors.

The Minister said, India's startup ecosystem has expanded from barely 350-400 startups in 2014 to more than two lakh startups today, making India the world's third-largest startup ecosystem. He said India's Global Innovation Index ranking improved from 80 to 38, while the country today ranks sixth globally in patents with more than one lakh patents filed, over 55 percent of them by Indian residents. He added that India has also emerged among the world's leading nations in scientific publications and innovation-driven research.

On the occasion, Dr Jitendra Singh also inaugurated the exhibition and interacted with exhibitors participating in the day-long event themed "Building India's Innovation Ecosystem for Viksit Bharat". The programme brought together fourteen Ministries and Departments associated with science, technology and research on a common platform for the first time.

The event also featured release of the compendium "TECH-संग्रह", showcasing indigenous technologies developed by autonomous institutes and laboratories of participating Ministries and Departments, besides technology transfer initiatives and exchange of MoUs.

Among those present on the occasion were Principal Scientific Adviser to the Government of India Prof. Ajay Kumar Sood; Secretary Department of Biotechnology, DG BRIC and Chairman BIRAC Dr. Rajesh S. Gokhale; Secretary Ministry of Earth Sciences Dr. M. Ravichandran, senior officials from DST, CSIR, ICMR, NITI Aayog and other scientific institutions.

A special message from Prime Minister Narendra Modi was read out by DBT Secretary Dr. Rajesh S. Gokhale, in which the Prime Minister extended his greetings on National Technology Day and appreciated the coming together of multiple science Ministries and Departments on a single platform to strengthen India's innovation and research ecosystem.

Dr. Jitendra Singh said several landmark initiatives launched during the last decade have positioned India among frontline scientific nations. Referring to the National Quantum Mission, India AI Mission, Anusandhan National Research Foundation, Research Development and Innovation initiative, WISE-KIRAN scheme for women scientists and NIDHI programme for startups, he said the government has consistently expanded opportunities for innovation, entrepreneurship and inclusive scientific growth.

The Minister also highlighted administrative reforms undertaken to provide greater autonomy and flexibility to scientific institutions, including liberalised procurement norms and delegation of Global Tender Inquiry exemption powers to institute directors to accelerate research and innovation activities.

Calling for deeper collaboration among scientific institutions, Dr. Jitendra Singh stressed the need to move beyond intra-ministerial coordination towards wider inter-science integration so that institutions working on similar themes such as vaccines, genomics and emerging technologies can work together in a collaborative framework for larger national outcomes.

Referring to Prime Minister Narendra Modi's recent seven-point public appeal, Dr. Jitendra Singh urged members of the scientific community to follow the appeal in letter and spirit, particularly emphasising the need to avoid unnecessary foreign travel and adopt more responsible and efficient practices wherever possible.

The Minister said every contribution towards Viksit Bharat in the coming years would, directly or indirectly, be linked with science and technology, making India's scientific ecosystem central to the nation's journey towards 2047.

In his address, Principal Scientific Adviser Prof. Ajay Kumar Sood described the event as a landmark "whole-of-government" initiative for Indian science and said the convergence of technologies across Ministries and institutions is essential to address national challenges relating to health, climate, defence, agriculture etc.

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2259847®=3&lang=1>

*

The Tribune
The Statesman
ਪੰਜਾਬ ਕੇਸਰੀ ਜਨਸਤਾ
The Hindu
The Economic Times
Press Information Bureau
The Indian Express
The Times of India
Hindustan Times
नवभारत टाइम्स
दैनिक जागरण
The Asian Age
The Pioneer